॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१११

महाकविश्रीकालिदासविरचितं

मेघदूतम्

'चन्द्रकला'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः—

आचार्य श्रीशेषराजशर्मा रेग्मीः

भूतपूर्व-प्राध्यापकः

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य, नेपालस्यत्रिभुवनविश्वविद्यालयस्य,

वाल्मीकिसंस्कृतमहाविद्यालयस्य च

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१

उपोद्घात

महाकवि कालिदास

कविकुलगुरु कालिदास भारतके ही नहीं अपितु विश्वके स्वनामधन्य श्रेष्ठ महाकवि और उत्तम नाटककारोंमें परिगणित हैं। खण्डकाव्य, महाकाव्य और नाटक सर्वत्र ही उनकी कवित्वशक्ति पूर्णरूपसे परिपक्व दृष्टिगोचर हो रही है। इस प्रकार काव्यके इन तीनों विभागोंमें किसी देशका कोई भी कवि उनकी बराबरी नहीं कर सका, यह बात निर्विवाद है। प्रकृतिकी मनोरम मूर्तिको प्रतिफलित करनेमें और अपने प्रबन्धोंके पात्रोंके चरित्रोंका असाधारण चित्रण करनेमें महाकवि अद्वितीय हैं; इस विषयमें कोई भी उनका मुकाबला नहीं कर सकता है। उनकी लेखनीसे, उनकी कृतियोंसे भारतवर्ष और आर्यजाति गौरवान्वित है, समस्त विश्वमें आर्यसंस्कृति परम श्रद्धा और भक्तिकी आश्रय बन गई है। आर्यसंस्कृतिकी उदात्तताके प्रदर्शनमें महाकविका सर्वश्रेष्ठ स्थान है। उन्होंने सत्य, शिव और सौन्दर्यकी जो पूर्णता दरसाई है वह वर्णनातीत है। बहिर्जगत् और अन्तर्जगत्का चरम प्रदर्शन करना ही महाकविका लक्ष्य रहा था इसलिए उनपर न्यूनताका आरोपण हो ही नहीं सकता है। सहस्ररश्मिकी किरणोंसे जैसे तिमिरका आविर्भाव नहीं होता है उसी तरह कालिदासकी रचनाओंसे अशिव तत्त्वका उद्भासन नहीं हो सकता है। 'उपमा कालिदासस्य' यह कथन उपलक्षणमात्र है, वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण और उपमा अलङ्कार इनमें महाकवि अप्रतिद्वन्द्वी हैं; इस विषयमें कुछ भी मतभेद नहीं। इनके सिवाय अर्थान्तरन्यास, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, और रूपक आदि अलङ्कारोंका प्रदर्शन करनेमें भी कालिदास अपनी सानी नहीं रखते हैं।

इनकी रचनाओंमें पर्याप्त रूपसे व्यङ्ग्य अर्थकी प्रधानता होनेसे ध्वनि आविर्भूत होकर सहृदय जनोंको मुग्ध कर देती है। साहित्यके भाव और कला ये दोनों ही पक्ष कालिदासकी लेखनीसे समुज्ज्वल रूपमें निखर उठे हैं। इनकी फडकती हुई सूक्तियाँ हृदयके अभ्यन्तर-प्रदेशमें प्रवेश कर जाती हैं, जिनसे अनिर्वचनीय आनन्दकी उपलब्धि होती है। महाकविकी सम्पूर्ण विशेषताओंपर प्रकाश डालनेके लिए एक स्वतन्त्र बृहद्ग्रन्थकी आवश्यकता है, इस कारण हम अभी सविस्तर वर्णन नहीं करेंगे। हमें बहुत ही दुःखके साथ कहना पड़ता है कि ऐसे महान् विश्वकविके विषयमें हमें जो जानकारी है वह अतिशय परिमित है।

भारतवर्ष अध्यात्मवादी राष्ट्र है, इसलिए यहाँके विद्वानोंमें लोकैषणाका भाव बहुत ही न्यून रहा इसीसे यहाँके बहुतसे महानुभावोंका परिचय उनके ग्रन्थोंसे नहीं पाया जाता है। बाणभट्ट, कल्हण और माधवाचार्य आदि कतिपय विद्वानोंको छोड़कर अनेकों भारतीय विद्वानोंका परिचय जनश्रुतिपर अवलम्बित है, जो कि पूर्णरूपमें प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती है। महाकवि कालिदासमें आत्मश्लाघाका लेशमात्र भी नहीं था, इस

बातका परिचय तथा उनकी नम्रताकी परकाष्ठा रघुवंशके अधःस्थित श्लोकोंसे जानी जाती है—

'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाऽल्पविषया मतिः ।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनाऽस्मि सागरम् ॥ (१-२)
मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् ।
पांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः ॥ (१-३)
रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन् ।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः ॥' (१-६)

ऐसी किंवदन्ती है कि कालिदास पहले बहुत ही मूर्ख थे। राजा शारदानन्दकी विद्योत्तमा नामकी एक कुमारी, विदुषी तथा परम सुन्दरी थी। उसे अपनी विद्याका बड़ा अभिमान था, इस कारण 'जो मुझे शास्त्रार्थमें परास्त करेगा उसीके साथ मैं विवाह करूँगी' ऐसी शर्त उसने की थी। बहुतेरे विद्वान् उससे शास्त्रार्थ करने आये परन्तु विद्योत्तमाकी विद्वतासे सबके सब परास्त हो गये थे। ईर्ष्याके कारण उन लोगोंने राजकुमारीका एक महामूर्खके साथ विवाह करनेके लिए षड्यन्त्र रचनेका विचार किया वैसे मूर्खके अन्वेषणके प्रसङ्गमें उनलोगोंने किसी पेड़की डालपर बैठकर उसीको काटनेके लिए तत्पर एक मूर्खको देखा। राजकुमारीका गर्वभङ्ग करानेके लिए उसे उपयुक्त पात्र समझ कर उनलोगोंने नीचे उतरनेके लिए प्रार्थना कर उस मूर्खसे कहा—'हमलोग एक परमसुन्दरी राजकुमारीके साथ तुम्हारा विवाह करा देंगे, और अपने गुरुके तौरपर तुम्हारा परिचय देंगे, परन्तु तुम कुछ मत बोलना।' आखिर विद्वान् लोग उस मूर्खको साथमें लेकर राजकुमारीके पास गये और कहा कि—'ये हमारे गुरुदेव सकल शास्त्रोंके पारदर्शी विद्वान् हैं, परन्तु आपने अभी मौनव्रत लिया है।' तब राजकुमारी विद्योत्तमाने 'ईश्वर एक है' इस अभिप्रायसे एक अङ्गुली ऊपर उठा ली। उस मूर्खने 'यह हमारी एक आँख फोड़ने का संकेत कर रही है' ऐसा समझ कर 'हम तुम्हारी दोनों आँखें फोड़ देंगे' इस अभिप्रायसे दो अङ्गुलियाँ ऊपर उठा लीं। इसपर उन पण्डितोंने समष्टि रूपसे ऐसे तर्क वितर्क किये कि जिनसे राजकुमारीको हार माननी पड़ी। ऐसे ही प्रसङ्गको लक्ष्य कर महाकवि माघने शिशुपालवध महाकाव्यमें बलरामजीके मुखसे यह श्लोक कहलाया है—

'विरोधिवचसो मूकान्वागीशानपि कुर्वते ।
जडानप्यनुलोमाऽर्थान्प्रवाचः कृतिनां गिरः ॥' (२-२५)

अर्थात् विद्वान्लोग अपने विरोधी वागीशोंको भी मूक और अनुकूल मूर्खोंको भी महान् वक्ता बनाते हैं।

फलतः पण्डितोंके सामूहिक तर्कसे हार मानकर राजकुमारी विद्योत्तमाको उस मूर्खसे विवाह करना पड़ा। सुहागरातके समय एक ऊँटकी चिल्लाहट सुनाई पड़ी। राजकुमारीने अपने पतिसे 'किमिदम् ?' ऐसा पूछा। तब उस मूर्खने शुद्ध उच्चारणकी असमर्थतासे

'उट्र' ऐसा उच्चारण किया। राजकुमारी पण्डितोंका षड्यन्त्रपूर्ण शाठ्य जानकर अपने दुर्भाग्यपर फूट-फूट कर रोने लगी और उसने अपने पतिको अपमानके साथ भवनसे बाहर निकाल दिया। उस मूर्खको अपनी पत्नीके व्यवहारसे इतना दुःख हुआ कि वह कालीमन्दिरमें जाकर आत्महत्या करनेके लिए उतारू हो गया। उसके जन्मान्तरके अदृष्टकी प्रबलतासे भगवती कालीने प्रसन्न होकर 'वरं ब्रूहि' ऐसा कहा। उस मूर्खने कवित्वपूर्ण विद्याकी सिद्धिके लिए प्रार्थना की। भगवतीके 'एवमस्तु' कहने पर वह तत्क्षण निखिल-शास्त्रनिष्णात होकर फिर अपनी पत्नीके पास गया। भवनका द्वार बन्द था, तब उसने 'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (द्वार खोलो) ऐसा कहा। राजकुमारीको आश्चर्य हुआ और उसने पूछा—**'अस्ति कश्चिद्वाग्विशेषः ?'** (क्या कुछ वचनकी विशेषता है ?) पतिने अपनी पत्नीके प्रश्नात्मक वाक्यके तीन पदोंको लेकर तीन काव्योंका निर्माण किया; जैसे कि **'अस्ति'** इस क्रियापदको लेकर **'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा'** इस प्रारब्ध चरणसे युक्त कुमारसंभव महाकाव्य, **'कश्चित्'** इन दो पदोंको लेकर **'कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः'** ऐसे प्रारम्भिक चरणसे सम्पन्न **'मेघदूत'** नामक खण्डकाव्य और **वाग्** इस पदको लेकर **'वागर्थाविव संपृक्तौ'** ऐसे आद्य चरणसे भूषित रघुवंश महाकाव्य बना डाला। कहना नहीं पड़ेगा कि राजकुमारी विद्योत्तमाके पूर्वाल्लिखित मूर्ख पति ही भगवती कालीके अनुग्रहसे 'कालिदास' नामवाले जगद्विख्यात महाकवि हो गये। यह किंवदन्ती बहुत ही प्रसिद्ध है।

कोई यह भी कहते हैं कालिदास ५०० ई० में वर्तमान सिंहल (लङ्का) के महाराज कुमारदास आश्रित थे और वे किसी वेश्याके घरमें मारे गये कालिदासकी रचनाओंका अध्ययन करनेपर इस किंवदन्तीकी निःसारता प्रतीत होती है। सत्य, शिव और सौन्दर्यका अद्वितीय प्रतिष्ठापक, आदर्शवादी तथा सरस्वतीके वरदपुत्र महाकवि कालिदासपर दुश्चरित्रताका द्योतन करनेवाली ऐसी किंवदन्ती आश्रयाऽसिद्धिसे स्वयं खण्डित हो जाती है।